गर्भगीता



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

श्रीः ।

गर्भगीता ।

भाषा ।

श्रीकृष्णार्जुनसंवाद ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास™,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : दिसंबर २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : १० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

श्रीः ।

अथ

गर्भगीता.

श्रीकृष्णार्जुनसंवाद ।

ॐश्रीगणेशाय नमः ॥ अर्जुनजी श्रीभगवान्‌के पास प्रश्न करते हुए, पाप पुण्यके विचाररहित श्रीकृष्णभगवान्‌का वचन है । जो प्राणी इस गर्भगीताका विचार करता है सो पुरुष फिर गर्भवासमें नहीं आता ॥

अर्जुन उवाच–हे श्रीकृष्णजी ! यह प्राणी जा गर्भविषे आता है सो किस दोष करके आता है ? हे प्रभुजी ! जब यह जन्मता है तब इसको जरा आदिक रोग लगते हैं, फिर मृत्यु होती है. हे स्वामी ! वह कौन कर्म है जिसके करनेसे जन्म मरणसे रहित होवे ? ॥

श्रीभगवानुवाच–हे अर्जुन ! यह जो मनुष्य है सो. अंधा मूर्ख है और संसारके साथ प्रीति करता है, यह पदार्थ मैंने पाया है और यह पाऊंगा ऐसी चिंता इस प्राणीके मनसे उतरती नहीं। आठ पहर मायाको ही मांगताहै। इन बातों करके बारंबार जन्मता मरता रहता है। गर्भविषे दुःख पाता है ॥

अर्जुन उवाच–हे श्रीकृष्ण ! भगवन् ! यह मन मस्त हाथीकी नाईं है, तृष्णा इसकी शक्ति है। यह मन पांचके वश है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और इन पाचोंमें अहंकार बहुत बली है। सो कौन यत्न है जिससे मन वश होय ? ॥

श्रीभगवानुवाच–हे अर्जुन ! यह मन निश्चय हाथीकी नाईं है, तृष्णा इसकी शक्ति है। मन पाचके वश है। अहंकार इनमें श्रेष्ठ है।

हे अर्जुन! जैसे हाथी अंकुशके वश होता है वैसेही मनरूपी हाथीके वश करनेको ज्ञानरूपी अंकुश है। अहङ्कार करनेसे यह जीव नरकमें पडता है॥

अर्जुन उवाच--हे श्रीकृष्ण! भगवन्! एक तुम्हारे नामके लिये वनखण्डमें फिरते हैं। एक वैरागी हुए हैं। एक धर्म करते हैं, इनविषे कैसे जानिये कि जो वैष्णव हैं वे कौन हैं?॥

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन! एक मेरेही नामके लिये वनोंमें फिरते हैं। वह एक संन्यासी कहाते हैं। एक शिरपर जटा बांधते हैं। एक भस्म लगाते हैं। इनमें हम नहीं हैं। क्योंकि, इनविषे अहंकार है, इससे मेरा दर्शन दुर्लभ है॥

अर्जुन उवाच--हे श्रीभगवन्! वह कौन पाप है जिससे स्त्री मर जाती है? वह कौन पाप है जिससे पुत्र मर जाते हैं? और नपुंसक कौन पापसे होता है?॥

श्रीभगवानुवाच–हे अर्जुन ! जो किसीसे करज लेता है और देता नहीं, इस पापसे स्त्री मरती है और जो किसीकी अमानत रक्खी हुई पचाय लेते हैं उनके पुत्र मरते हैं, जो किसीका कार्य किसीके गोचर आय पडे और वह जबानी कहे मैं तेरा कार्य सबसे पहिले करदूंगा. जब समय आय-पडे तब उसका कार्य नहीं करे, इस पापसे नपुंसक होता है, ये बडे पाप हैं ॥

अर्जुन उवाच--हे श्रीकृष्ण ! भगवन् ! कौन पापसे मनुष्य सदैव रोगी रहता है ? किस पापसे गधेका जन्म पाता है ? स्त्रीका जन्म तथा टट्टूका जन्म क्योंकर पाता है ? और बिल्लीका जन्म किस पापसे होता है ? ॥

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन ! जो मनुष्य कन्यादान करते हैं और इस दानमें मूल्य लेते हैं वे दोषी हैं, वे मनुष्य सदा रोगी रहते

हैं । जो विषयविकारके वास्ते मदिरापान करते हैं सो टट्टूका जन्म पाते हैं। जो झूठी गवाही भरते हैं वे स्त्रीका जन्म पाते हैं। जो रसोई बनाकर पहिले आप खा लेते हैं और पीछे परमेश्वर अर्थ दान करते हैं वे बिल्लीका जन्म पाते हैं और स्त्रीका जन्म पाते हैं। जो मनुष्य अपनी जूठी वस्तु दान करते हैं वे स्त्रीजन्म पाते हैं पर गुलाम औरतें होती हैं ॥

अर्जुन उवाच--हे श्रीकृष्ण ! भगवन् ! कोई मनुष्योंको तुमने सुवर्ण दिया है सो उन्होंने कौन पुण्य किया है ? और कोई मनुष्योंको आपने हाथी, घोडा; रथ दिये हैं उन्होंने कौन पुण्य किया है ? ॥

श्रीभगवानुवाच-हे अर्जुन ! जिन्होंने स्वर्णदान किया है उनको हाथी, घोडे, वाहन

मिलते हैं, जो परमेश्वरनिमित्त कन्यादान करते हैं सो पुरुषका जन्म पाते हैं ॥

अर्जुन उवाच--हे भगवन् ! जिन पुरुषोंके सुन्दर विचित्र देह हैं उन्होंने कौन पुण्य किया है ? किसीके घर संतति है, कोई विद्यावान् है उन्होंने कौन पुण्य किया है ? ॥

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन ! जिन्होंने अन्नदान किया है उनका स्वरूप सुन्दर है। जिन्होंने विद्यादान किया है वे विद्यावान् होते हैं। जिन्होंने संतोंकी सेवा करी है वे पुत्रवान् होते हैं॥

अर्जुन उवाच--हे भगवन् ! किसीकी धनसे प्रीति है, कोई स्त्रियोंसे प्रीति करते हैं इसका क्या कारण है ? ॥

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन ! धन स्त्री सब नाशरूप हैं, मेरी भक्तिका नाश नहीं है ॥

अर्जुन उवाच--हे भगवन् ! राजपाट किस धर्मसे मिलते हैं ? विद्या कौन धर्मसे मिलती है ? ॥

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन ! जो प्राणी श्रीकाशीजीमें निष्काम भक्तिसे तप करते हैं, देह त्यागते हैं सो राजा होते हैं । जो गुरुकी सेवा करता है सो विद्यावान् होता है ॥

अर्जुन उवाच--हे भगवन् ! किसीको धन अचानक बिना परिश्रम मिलता है, कोई सारी उमर रोगरहित होते हैं, सो उन्होंने कौन पुण्य किये हैं ॥

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन ! जिन्होंने गुप्त-दान किया है,उनको धन अनायासही मिलता है, जिन्होंने परमेश्वरका कार्य और पराया कार्य सँवारा है वे रोगसे रहित होते हैं ॥

अर्जुन उवाच--हे भगवन् । कौन पापसे अमली होते हैं ? कौन पापसे गूंगा होता है । कोन पापसे कुष्ठी होता है ? ॥

श्रीभगवानुवाच–हे अर्जुन ! जो अपने कुलकी स्त्रीसे गमन करते हैं सो अमली होते हैं । जो गुरूसे विद्या पढकर मुकड जाते हैं सो गूँगे होते हैं । जिन्होंने गोघात किया है वे कुष्ठी होते हैं ॥

अर्जुन उवाच–हे श्रीभगवन् । किसीकी देहमें रक्तका विकार होता है सो किस पापसे ? कोइं दरिद्री होते हैं, किसीको खरडवायु होती है, कोईं अन्धे होते हैं, कोईं पंगुळे होते हैं सो कौन पापसे होते हैं ? कोईं स्त्रियां बालविधवा होती है, सो कौन पापसे होती हैं ?

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन । जो सदा

क्रोधवान् रहते हैं, उनको रक्तका विकार होता है। जो कुशील रहते हैं वे दरिद्री होते हैं । जो कुकर्मी ब्राह्मणको दान देते हैं, उनको खर-डवायु होती है। जो प्राणी स्त्रीको नंगी देखता है, गुरुकी स्त्रीसे कुदृष्टि करता है सो अन्धा होता है । जिसने गौब्राह्मणको लात मारी है, सो लंगडा व पंगुला होता है। जो स्त्री अपने पतिको छोडकर पराये पुरुषोंसे संग करती है सो बालवि-धवा होती है ॥

अर्जुन उवाच--हे भगवन् । हे श्रीकृष्ण-जी । तुम परब्रह्म हो तुमको मेरा नमस्कार है । आगे मैं तुमको सम्बन्धी जानता था, अब मैं परमेश्वररूप जानता हूँ। हे परब्रह्म । गुरुदीक्षा कैसी होती है ? सो कृपा कर कहो ॥

श्रीभगवानुवाच- हे अर्जुन। तुमको धन्य है २ फिर भी धन्य है। तुम्हारे माता पिता भी

धन्य हैं जिनके तुम ऐसे पुत्र हैं । जिनने गुरुदीक्षा पूछी है । हे अर्जुन ! सारे संसारके गुरु जगन्नाथ हैं । विद्याका गुरु काशी, चारों वर्णोंका गुरु ब्राह्मण; ब्राह्मणका गुरु संन्यासी । संन्यासी उसको कहते हैं जिसने सबका त्याग करके मेरे विषे मन लगाया है सो ब्राह्मण जगद्गुरु है । हे अर्जुन ! यह बात ध्यान देकर सुननेकी है । गुरु कैसा करे जिसने सब इन्द्रियां जीती हों । जिसको सब संसार ईश्वररूप नजर आता हो । सब जगत्से उदास हो । ऐसा गुरु करे जो परमेश्वरको जाननेवाला होवे । उस गुरुकी पूजा सब तरह करे । हे अर्जुन ! जो गुरुका भक्त होता है सो मेरा भक्त होता है, जो प्राणी गुरुके सम्मुख हो कर, मेरा भजन करते हैं उनका भजन करना सुफल है । जो प्राणी गुरुसे विमुख हैं उनको सत ग्राम मारेका पाप

है । गुरुसे विमुख प्राणीका दर्शन करना योग्य नहीं । जो गृहस्थ गुरुसे बिना हो सो चांडालके समान है, जिस तरह मदिराका भाण्ड हो उस विषे जो गंगाजल है सो अपवित्र होता है इसी तरह गुरुसे विमुखका भजन सदा अपवित्र होता है । उसके हाथका देवता भी नहीं लेते । उसके सब कर्म निष्फल हैं । कूकर सूकर गर्दभ काक इन सब योनियोंसे सर्पकी बडी खोटी योनि है इन सबसे वह मनुष्य खोटा है,जो गुरु नहीं करता। गुरु विन गति नहीं होती।अवश्य नरकोंको जावेगा। गुरु दीक्षा विना प्राणीके सब कर्म निष्फल होते हैं। हे अर्जुन ! जैसे चारों वर्णोंको मेरी भक्ति करनी योग्य है, तैसे गुरु धारके गुरुकी भक्ति करनी सेवा करनी योग्य है ।जैसे सब नदियोंमें गंगा श्रेष्ठ है, सब व्रतोंमें एकादशीका व्रत श्रेष्ठ है वैसे ही

हे अर्जुन ! सब शुभ कर्मोंसे गुरुसेवा उत्तम है। गुरुदीक्षा विना प्राणी पशुयोनि पाता है। जो धर्म भी करता है सो पशुयोनिमें फल भोगता है, चौरासीमें भ्रमता रहता है ॥

अर्जुन उवाच--हे श्रीकृष्णजी ! गुरुदीक्षा क्या वस्तु है ? ॥

श्रीभगवानुवाच--हे अर्जुन ! धन्य जन्म है तेरा जिसने यह प्रश्न किया है। तू धन्य है। गुरुदीक्षा दोनों अक्षर हैं। हरि राम इन अक्षरोंको गुरुकहता है, यह चारों वर्णोंको जपना श्रेष्ठ है। हे अर्जुन ! जो गुरुकी सेवा करता है सो मेरी सेवा करता है। मेरी उसपर प्रसन्नता है । वह चौरासीसे छूट जावेगा । जन्म मरणसे रहित नरक नहीं भोगता। जो प्राणी गुरुकी सेवा करता नहीं सो साढे तीन करोड बरस नरक भोगता

है। जो गुरुकी सेवा करता है उसको कई अश्वमेधके पुण्यका फल होता है। गुरुकी सेवा मेरी सेवा है। हे अर्जुन! हमार तुम्हारे संवादको जो प्राणी पढेंगे और सुनेंगे सो गर्भ दुःखसे बचेंगे। उनकी चौरासी कट जायगी॥

इसी करके इस पाठका नाम गर्भगीता है श्रीकृष्ण महाराजके मुखसे अर्जुनने श्रवण करी है। गुरुदीक्षा लेना उत्तम कर्म है। उसका फल यह है कि नरकसे व चौरासीसे जीव बच रहता है और भगवान् प्रसन्न होते हैं॥

इति श्रीगर्भगीता समाप्ता॥ शुभम्॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान ;

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट.
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्यावाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS